www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रमे संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

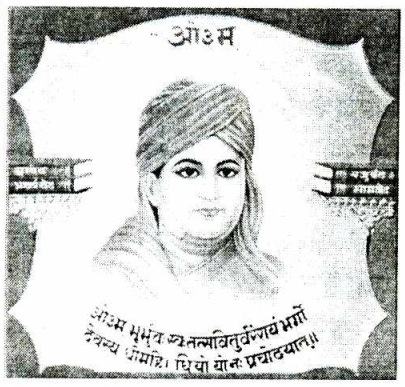

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 28-30 रोहतक, 7-14 जनवरी, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से निर्विघ्न सम्पन्न

९ प्रो० ओमकुमार आर्य, उपमन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा देश की सबसे पुरानी, ऐतिहासिकि एवं सक्रिय सभा है। अविभाजित पंजाब [हरयाणा बनने से पूर्व सन् 1966] में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इसकी पूर्ववर्ती सभा थी, हरयाणा बनने के बाद यह हरयाणा के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम से अपना कार्य करने लगी। आगामी तीन वर्षों के लिए इसका त्रिवार्षिक चुनाव दिनांक 26.12.2013 वीरवार सुबह 11 बजे से 3 बजे तक महर्षि दयानन्द सीनियर सैकण्ड्री स्कूल माता दरवाजा, रोहतक के भवन में शान्तिपूर्वक, निर्विघ्न एवं सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। इस चुनाव की प्रक्रिया हरयाणा फर्मज एण्ड सोसायटीज एक्ट-2012 के प्रावधानों के अनुसार चुनाव की घोषणा के साथ प्रारम्भ हुई और उक्त एक्ट के प्रावधानों के अनुसार ही कोलिजियम बनाये गये, जिनमें दो कोलेजियमों पर मतदान हुआ, शेष कोलेजियमों का चुनाव (जो कि सर्वसम्मत था) हुआ, नामांकन करवाया गया, नियमानुसार नाम वापिस लिये गये और नाम वापसी के पश्चात् दिनांक 14.12.13 को उतने ही नामांकन शेष रहे। जितने कि उक्त एक्ट के प्रावधानों के अनुसार अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की संख्या के हिसाब से आवश्यक थे, जो कि अधिकारी 6 (छः) और उनके अतिरिक्त अन्तरंग सदस्य 15 (पन्द्रह) बनते हैं अर्थात् कुल संख्या 21 (इक्कीस) होनी थी जो विधिवत् नियमानुसार निर्विरोध चुन लिये गये।

दिनांक 26.12.2013 को सुबह 9 बजे पहले तो आमसभा की बैठक हुई, इससे पहले के सभामन्त्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री ने विगत तीन वर्षों का सभा का वृत्तान्त प्रस्तुत किया, सभी उपस्थित जनों ने समस्त कार्यवाही का सर्वसम्मत से अनुमोदन किया। तत्पश्चात् श्री सत्यवीर जी शास्त्री ने अपनी कार्यकारिणी (2010-13) का त्यागपत्र प्रस्तुत किया। यहाँ तक सभा की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (2010-13) के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने की जो कि अब नये गठन (2013-16) के भी सर्वसम्मत प्रधान हैं।

तदुपरान्त 11 बजे घोषित कार्यक्रम के अनुसार चुनाव सम्बन्धी कार्यवाही विधिवत् प्रारम्भ हुई। चुनाव अधिकारी श्री धर्मपाल जी आर्य (प्रधान-आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली) थे तथा उनकी सहायता हेतु दो सहायक चुनाव अधिकारी भी नियुक्त किये हुये थे—श्री विनय आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं श्री राजरूप राठी रोहतक। निर्वाचन अधिकारी श्री धर्मपाल जी आर्य ने कोलेजियम के सभी उपस्थित सदस्यों को, जो कि 105 में से लगभग 90 उपस्थित थे, चुनाव की घोषणा से लेकर अब तक के (26.12.13 तक) चुनाव-प्रक्रिया के विभिन्न चरणों से जुड़े सभी महत्त्वपूर्ण कदमों, तथ्यों जैसे कोलेजियम बनाना, कोलेजियम का चुनाव, नामांकन, नाम वापसी आदि से अवगत कराया और बताया कि जब नियमानुसार दिनांक 14.12.13 तक नाम वापिस ले लिये गये तो अधिकारियों के लिये 6 (छः) [जो छः ही चुनने थे] और अन्तरंग सदस्यों के 15 (पन्द्रह) [जो पन्द्रह ही चुनने थे] नाम शेष रहे और इस प्रकार उक्त एक्ट के प्रावधानों के तहत पूर्णतया नियमानुसार यह त्रिवार्षिक चुनाव वास्तव में तो 14.12.13 को ही निर्विरोध सम्पन्न हो गया था जिसकी औपचारिक घोषणा आज (26.12.13) निर्धारित तिथि को ही की जा रही है अर्थात् माननीय निर्वाचन अधिकारी ने घोषणा की कि यह त्रिवार्षिक चुनाव (2013-16) निर्विरोध/सर्वसम्मत सम्पन्न हुआ। सभी ने करतल ध्वनि से सहर्ष इस घोषणा का स्वागत किया।

माननीय निर्वाचन अधिकारी ने दो-तीन बार स्पष्ट पूछा कि यदि किसी सदस्य को कोई आपत्ति हो तो बताये। किसी ने कोई आपत्ति/विरोध नहीं जताया। इस प्रकार विवेच्य त्रि-वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। निर्वाचित पदाधिकारी एवं अन्तरंग के सदस्य अग्रलिखित हैं—

(1) प्रधान-आचार्य विजयपाल जी, (2) उपप्रधान-आचार्य यशपाल जी, (3) महामन्त्री-मा० रामपाल जी दहिया, (4) उपमन्त्री-प्रो० ओमकुमार आर्य, (5) कोषाध्यक्ष-श्री कन्हैयालाल आर्य, (6) पुस्तकाध्यक्ष-श्री आजादसिंह आर्य।

अन्तरंग सदस्य—सर्वश्री (1) आचार्य बलदेव जी, (2) सत्यवीर जी शास्त्री, (3) डॉ० सुरेन्द्र कुमार, (4) आचार्य योगेन्द्र (5) स्वामी ब्रह्मानन्द, (6) धर्मवीर जी शास्त्री, (7) आचार्य ऋषिपाल, (8) मा० रामनिरंजन, (9) जगदीश सींवर, (10) वीरेन्द्र पाढ़ा, (11) रोशनलाल जी, (12) वेदप्रकाश जी, (13) राजवीर छिक्कारा, (14) डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार एवं (15) श्रीमती सुमित्रा आर्या।

तदुपरान्त नवनिर्वाचित मंत्री श्री रामपाल जी दहिया ने निर्वाचन अधिकारी, सहायक निर्वाचन अधिकारियों, सभी उपस्थित सदस्यों, जिला प्रशासन, पुलिस अधिकारी, मीडिया, महर्षि दयान्द सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल की संचालिका श्रीमती सुमित्रा वर्मा तथा अन्य सभी सम्बद्ध सहयोगियों का धन्यवाद किया और एक प्रस्ताव सर्वसम्मत से पारित करवाकर उन उद्दण्ड, हुड़दंगी, उपद्रवी एवं शरारती तत्त्वों की घोर शब्दों में निन्दा की जिन्होंने लगभग 400-500 की संख्या में दिनांक 24.12.13 को सुबह 9-9.30 बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक में जबरन घुसकर डकैतों की तरह से लूटपाट की, तोड़फोड़ की, रिकार्ड को उठा ले गये, कम्प्यूटर आदि को बुरी तरह क्षतिग्रस्त किया और कार्यालय में उपस्थित स्टाफ को बन्धक बनाया, उन्हें जान से मारने तक की धमकी दी।

मंत्री जी के इस निन्दा प्रस्ताव का सभी ने सर्वसम्मत समर्थन किया और प्रशासन से अनुरोध किया कि इन शरारती तत्त्वों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाये।

शेष पृष्ठ 7 पर....

हम कैसा ईश्वर चाहते हैं?

लेख का शीर्षक अधिकांश पाठकों को बेतुका लगेगा। है भी। ईश्वर क्या by choice होता है, इच्छा से मिलता है? वास्तविकता तो यही है कि ईश्वर जैसा भी है, उसके स्वरूप को हमें पहचानना होगा, समझना होगा। वैदिकयुगीन ऋषि-महर्षियों का चिंतन इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित था।

वैदिक कालीन ऋषियों ने ईश्वर का स्वरूप कैसा निर्धारण किया, उसे महर्षि दयनन्द के शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।

भू-मण्डल में ऐसे ईश्वर की स्वीकार्यता, मान्यता 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 114 वर्ष रही। इसमें 6 हजार वर्ष कम किये जा सकते हैं, क्योंकि विद्वान् मानते हैं कि महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व वैदिक सभ्यता का तिरोहन प्रारम्भ हो गया था।

वास्तविकता के धरातल पर हम विचार करें तो उपरोक्त गुणों से सम्प्रक्त ईश्वर की स्वीकार्यता हमें दिखाई नहीं पड़ती। आज हम ईश्वर का स्वरूप अपनी इच्छा के अनुसार निर्धारित करना चाहते हैं या यों कहें कि हम अपनी इच्छा का ईश्वर चाहते हैं।

हम माँग, मनोकामना, मन्नत पूरी करने वाला ईश्वर चाहते हैं। माँग, मन्नत यदि कब्र में लेटा हुआ मुर्दा भी पूरी कर सकता है, तो वह भी चलेगा। हमें मालूम ही नहीं है कि वेदोक्त ईश्वर ने सृष्टि रचना के साथ जीवात्मा की समस्त न्यायोचित माँगों को लोक कल्याण को, जीव के चहुँमुखी कल्याण को, आजीवन पूरी करने का ठेका ले लिया था। उन्हें पूरी करने का रास्ता भी बता दिया था। हम उस रास्ते पर चलना नहीं चाहते। चाहे वेद कहें या गीता- अन्यथा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का यह स्वरूप नहीं होता जो आज उपासना गुहों में सर्वत्र दिखलाई पड़ता है। लोग शुद्ध मन से ईश्वर की, केवल ईश्वर की उपासना के लिये इन उपासना गृहों में नहीं जाते। श्रद्धासुमन के साथ रिश्वत का प्रस्ताव भी अपनी आर्थिक सम्पन्नता के अनुरूप करते हैं। प्रसाद से लेकर स्वर्ण मुकुट भेंट करने तक। मन्नत पूरी न करने पर धौंस देते हैं—तेरी चौखट पर नहीं आयेंगे। यह प्यार भरा उलाहना नहीं होता है। दुःख, निराशा व आक्रोश भरे उद्गार होते हैं।

एक बिन्दु के अतिरिक्त अन्य दो बिन्दुओं पर विचार करना मेरे आशय को पूर्णतया स्पष्ट करने के लिये आवश्यक है।

दूसरा बिन्दु है—पापाचरण से मुक्ति। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर को न्यायकारी निरूपित किया है। न्यायकारी शब्द के अन्तर्गत कर्मफल प्रदाता का गुण अन्तर्भूत (inherent) है। यह हम नहीं चाहते।

पौराणिक बन्धुओं के लिये तो पाप-ताप निवारण के लिये ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं है। गंगा मैया ही काफी है। प्रत्येक कुम्भ पर करोड़ों हिन्दू भक्तों के पाप गंगा मैया बिना डिटरजेंट लगाए (बिना कर्मफल दिये) धो डालती हैं। यदि इस प्रक्रिया को पूर्णतया सत्य भी मान लें तो गंगा मैया उन भक्तों से क्यों नहीं कहती कि इस बार तुम्हें पाप मुक्त करती हूँ, अगली बार नहीं करूँगी। लेकिन गंगा तो मुक्तिदायिनी जलप्रवाह है। पाप करके आइए, वह पाप धो देगी। आपका काम है पाप करना और गंगा का काम है, पाप धोना। यह कार्य निरन्तर उस समय से चल रहा है जबसे गंगा को पाप धोने का ठेका धर्मधुरीणों ने अयाचित ही दे दिया था। वेदोक्त ईश्वर कहता है कि पाप कर्म से बिना यथोचित दण्ड पाये निवृत्ति नहीं, छुटकारा नहीं। गंभीर दुराचरण की कड़ी से कड़ी दण्ड व्यवस्था। प्रत्येक पापकर्म की दण्ड व्यवस्था। गंगा पूछती नहीं कि कौन सा पाप किया है। एक डुबकी लगाई और एक नहीं, सब पाप धुल गए।

पाप निवृत्ति का यह प्रसंग ईश्वर की न्यायव्यवस्था से जुड़ा है। महर्षि ने संदर्भित वर्णन में ईश्वर का न्यायकारी होना भी बताया है। ईश्वर का वेदोक्त न्यायकारी स्वरूप विश्व भर के 99.99 प्रति जनसमुदाय को स्वीकार्य नहीं है। प्रतिशत बढ़ाकर शत-प्रतिशत कर सकता हूँ पर अज्ञात ईश्वर भक्तों के लिए कुछ गुंजाइश तो इस अल्पज्ञ को छोड़नी ही पड़ेगी।

ईश्वर को न्यायकारी तो सब चाहते हैं, परन्तु ऐसा न्यायाधीश जो उनके ही पक्ष में निर्णय दे। चाहे वे गलत हों या सही हों। हम ईश्वर को भी उसी रूप में देखना चाहते हैं जिस रूप में मानवीय न्यायालयों में दिखाई पड़ता है। मानवीय न्यायालयों में निर्णय गवाह, सबूत के आधार पर होता है। गवाह, सबूत ऐसे होने चाहियें जिनसे न्यायाधीश पूर्णतया संतुष्ट हो अन्यथा शक की स्थिति में लाभ आरोपी को मिलता है। हमारे यहाँ तो ब्रिटिश न्याय व्यवस्था की परम्परा अक्षरशः निभाई जा रही है। सौ अपराधी छूट जावें, लेकिन एक निरपराधी को सजा नहीं मिले। ऐसी मानसिकता से अपराधियों को सजा मिलने की संभावना कम होती है। न्याय व्यवस्था की कई सीढ़ियां हैं। ट्रायल कोर्ट से लेकर उच्चतम न्यायालय तक। फिर जघन्य अपराधों में मृत्युदण्ड पाये अपराधियों की दया याचना के लिये राष्ट्रपति महोदय का द्वार खुला है। यह स्थिति है, मानवीय अदालतों की।

वैदिक ईश्वर की न्याय व्यवस्था में एक मात्र न्यायाधीश वही है। न उसके नीचे कोई अदालत है और न कोई ऊपर। उसे गवाह, सबूत, सिफारिश किसी की जरूरत नहीं, क्योंकि वह सर्वान्तर्यामी है। पक्ष और विपक्ष दोनों ही पक्षकारों के कर्मों की उसे पूरी-पूरी जानकारी है। वह न्याय करता है, फैसला नहीं। फैसले मानवीय अदालतें करती हैं। जितना बड़ा वकील, उसके तर्कों की उतनी पैनी धार, उतना ही फैसला उसके पक्षकार के पक्ष में जाने की प्रबल संभावना। लेकिन कभी यहाँ भी दांव गलत पड़ जाता है। एक पेशी के साढ़े चार करोड़ रुपये डकार लेने के बाद भी जेठमलानी आसाराम बापू को जमानत नहीं दिलवा सके, खैर छोड़िए।

वेदोक्त ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी होने में यानि जहां प्रकरण घटित हुआ, वहाँ भी वह मौजूद था। जिन व्यक्तियों के बीच घटा उनकी आत्मा के साथ में विराजमान था। इसलिये वह यथातथ्य न्याय करता है। उसे डराया, फुसलाया नहीं जा सकता। उसके निर्णय की अपील नहीं, क्योंकि उसके ऊपर, नीचे कोई नहीं। दण्ड कम-ज्यादा होने की गुंजाइश नहीं। व्यक्ति जानता है उसने पाप किया है, अपराध किया है। तरुण तेजपाल की तरह अपराध की स्वीकृति करने पर, पीड़िता से क्षमा याचना करने पर तथा स्वयं को कार्य से 6 माह के लिये निर्वासन का दण्ड भोगने पर भी अपरध की निवृत्ति नहीं होगी। बताइये ऐसा ईश्वर कौन चाहेगा?

इस्लाम व ईसाइयत के पापाचरण से मुक्ति, छुटकारे के दावे यदि सामान्य बौद्धिक स्तर पर स्वीकार्य होते तो सम्पूर्ण विश्व बिना खून खराबे के स्वतः प्रसन्नता पूर्वक ये धर्म अपना लेता और पूरी शान्ति से रहता, लेकिन ऐसा है नहीं।

इस्लाम में अल्लाहताला का न्याय रसूल की सिफारिश पर निर्भर करता है और केवल इस्लाम के अनुयायियों पर ही लागू होता है। वेदोक्त ईश्वर की तरह, विश्व के समस्त मानव समुदाय पर नहीं। इस्लाम में अनुयायियों के गुनाह सुनाने/बताने के लिये रसूल की आवश्यकता है और इस जीवन काल में पौराणिक भाइयों की तरह पापनिवृत्ति की कोई व्यवस्था नहीं है। दूसरे अल्लाहताला की अदालत का फैसला केवल एक दिन यानी कयामत के दिन ही होगा। तब तक कबर में ही रहना होगा।

ईसाइयत में यह कार्य ईसामसीह करते हैं। उन तक सिफारिश पहुँचाने का काम पादरी लोग पाप की स्वीकृति (कानफैशन) कराकर करते हैं। इस तरह ईसाइयत में पापमुक्ति की दो टियरवाली व्यवस्था है। पाप कर्मों की मुक्ति की गारण्टी दोनों धर्मों (मतों) में है।

अब आप ही बताइये, हमें किस धर्म को मानने में लाभ है? एक वह जो पापकर्मों से मुक्ति की गारण्टी, शत-प्रतिशत गारण्टी दे या वह जो न्यायानुसार दण्ड विधान की व्यवस्था करे। बड़ा कठिन है वेदोक्त न्यायकारी ईश्वर को मानना।

वेदोक्त संस्कृति, उसकी ईश्वर की अवधारणा, सृष्टि उत्पत्ति के साथ ही एक अरब 96 करोड़ 8 लाख, 53 हजार 114, (-) 6 हजार, वर्ष तक इस भूमण्डल पर रही। इस विरासत का अन्तिम उत्तराधिकारी महर्षि जैमिनी को माना जाता है। 6 हजार वर्ष के अंतराल के पश्चात् गुरु विरजानन्द जी महाराज ने इस विरासत को सम्भालने व दायित्व शिष्य दयानन्द को सौंपा। जिस पथ पर महर्षि दयानन्द को चलना पड़ा था वह पथ आज भी उतना ही कंटकाकीर्ण और उस पथ पर चलने वाले का हश्र भी उतना ही सुनिश्चित है जो महर्षि दयानन्द का हुआ।

—अभिमन्यु कुमार खुल्लर, 22 नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर ग्वालियर पिनकोड 474001 म.प्र.

www.thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय पर कब्जा

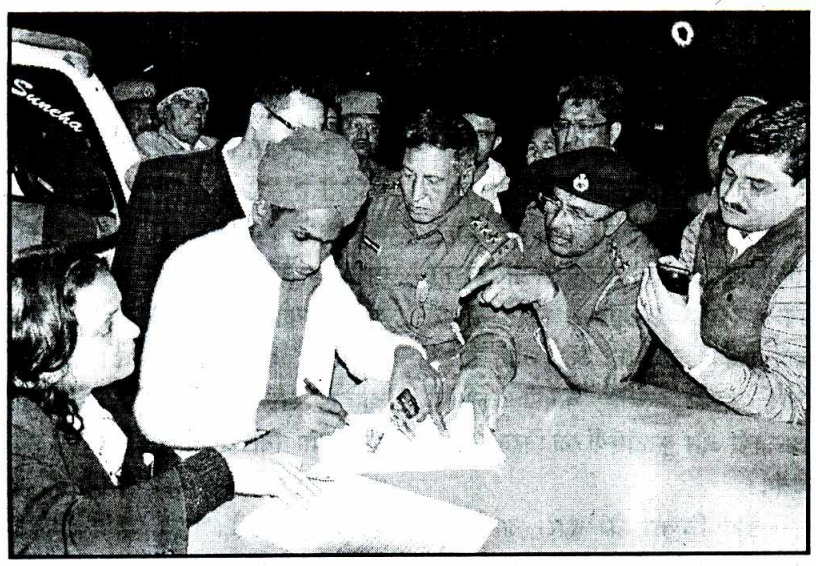

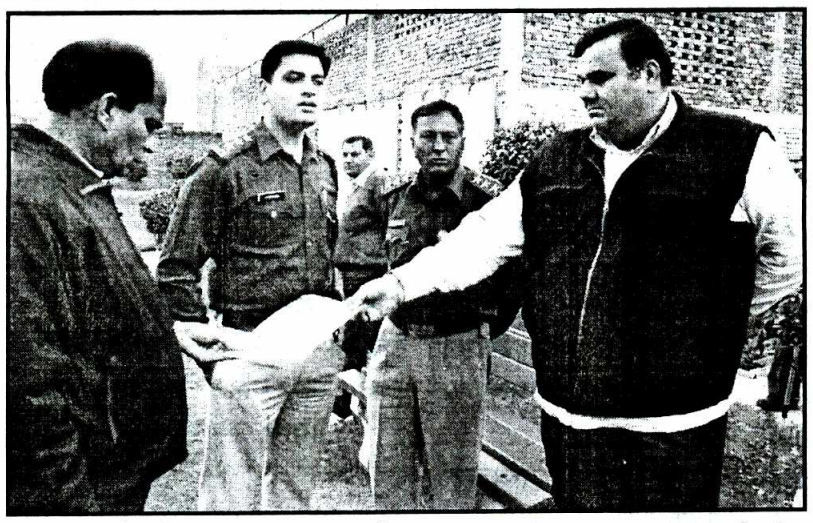

रोहतक। दिनांक 24 दिसम्बर 2013 को प्रात: लगभग 10 बजे सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में 30-35 गाड़ियों के काफिले ने अचानक प्रवेश किया, जिसमें लगभग 200 व्यक्ति थे। उनका नेतृत्व श्री हरपाल वाचस्पति, जगदीप शास्त्री, कैप्टन रणधीर सिंह बालन्द, वेदप्रकाश आर्य आदि कर रहे थे। उन्होंने सभा कार्यालय में सूचना दी कि सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार ने अनिल आर्या के नेतृत्व वाली आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को मान्यता प्रदान कर दी है। उन्होंने सभा कार्यालय अधीक्षक **श्री शेर**सिंह से कार्यालय की चाबी **जबरदस्ती** छीन ली। उसके बाद श्री सत्य**वान** सहायक कार्यालय अधीक्षक, श्री **सुरेन्द्र** कुमार कम्प्यूटर ऑपरेटर, श्री **रघुवर**दत्त सभा लिपिक से कार्यालय रिकार्ड की चाबियां ले ली **तथा जान से** मारने की धमकी देने **लगे। श्री** सुरेन्द्र कुमार से उनका मोबाइल **भी छीन**कर ले गये। कार्यालय के कमरों के ताले तोड़ दिए आलमारियों से सभा का रिकार्ड फाइलें, रजिस्टर, कम्प्यूटर आदि सामान गाड़ियों में भरकर ले गए। हरयाणा गोशाला संघ के प्रधान आचार्य योगेन्द्र को उनके कार्यालय से बाहर निकाल दिया तथा गोशाला संघ का कम्प्यूटर एवं सभी रिकार्ड फाइलें व अन्य सारा सामान भी उठाकर ले गए। उन्होंने 100 नं० पर फोन करके घटना की पुलिस को सूचना दी।

आर्य निर्मात्री सभा द्वारा बनाई गई राजनैतिक पार्टी राज्यसभा में बुरी तरह विफल रही। उसका एक उम्मीदवार भी चुनाव में अपनी जमानत तक नहीं बचा सका, ने निराश-हताश होकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ कार्यालय, जो ज्वाईंट पंजाब के समय से चला आ रहा था व उसकी सम्पत्ति पर कब्जा सरेआम दिन-दहाड़े डाका डाला दिनांक 24.12.2013 को पुलिस थाना सिटी रोहतक ने उन पर विभिन्न धाराओं के तहत एफ.आई.आर. दर्ज की गई, परन्तु दु:ख की बात है कि उन पर डकैती, कर्मचारियों को बंधक बनाने जैसी धाराएँ नहीं लगाई गईं। अब कार्यालय पर धारा-145 लागू है और पुलिस पहरा बैठा है।

उनके इस दुष्कर्म की आर्यजगत् में निन्दा हो रही है। क्या इस घिनौने कार्य को करने के बाद अब वे कहीं मुँह दिखाने व आपने आपको आर्य कहलाने के हकदार रह गए हैं? आज तक पुलिस प्रशासन न तो उनसे डकैती में उठाया गया सम्पूर्ण सामान बरामद किया और न ही उनको गिरफ्तार किया गया है। वे सभी अपराधी बेखौफ सरेआम घूम रहे हैं और धमकी दे रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उन सभी अपराधियों की गिरफ्तारी की मांग करते हुए सारा सामान लौटाने की पुलिस प्रशासन को एक सप्ताह तक की नोटिस भेजेगी। यदि पुलिस प्रशासन ने कोई कार्यवाही नहीं की तो संघर्ष का ऐलान किया जायेगा। संघर्ष में होने वाली अप्रिय घटना की जिम्मेदारी पुलिस प्रशासन की होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा 9 जनवरी को उपमण्डल अधिकारी (ना०) को अपना पक्ष मजबूती से रखेगी, क्योंकि सभा का त्रिवार्षिक चुनाव 2013-16 नए सोसायटी एक्ट 2012 के अनुसार वैधानिकता अपनाते हुए सम्पन्न किया है जिसको जिला फर्म एण्ड सोसायटी रजिस्ट्रार ने 6 पदाधिकारियों व पन्द्रह कार्यकारिणी सदस्यों की सूची को अनुमोदित कर दिया है। आर्य निर्मात्री सभा व स्वामी रामवेश जी की सूची को अमान्य करते हुए वापिस भेज दिया गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा जिसका कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में ज्वाइंट पंजाब के समय से चला हुआ है, को वैध माना है।

—मा० रामपाल आर्य, सभामन्त्री

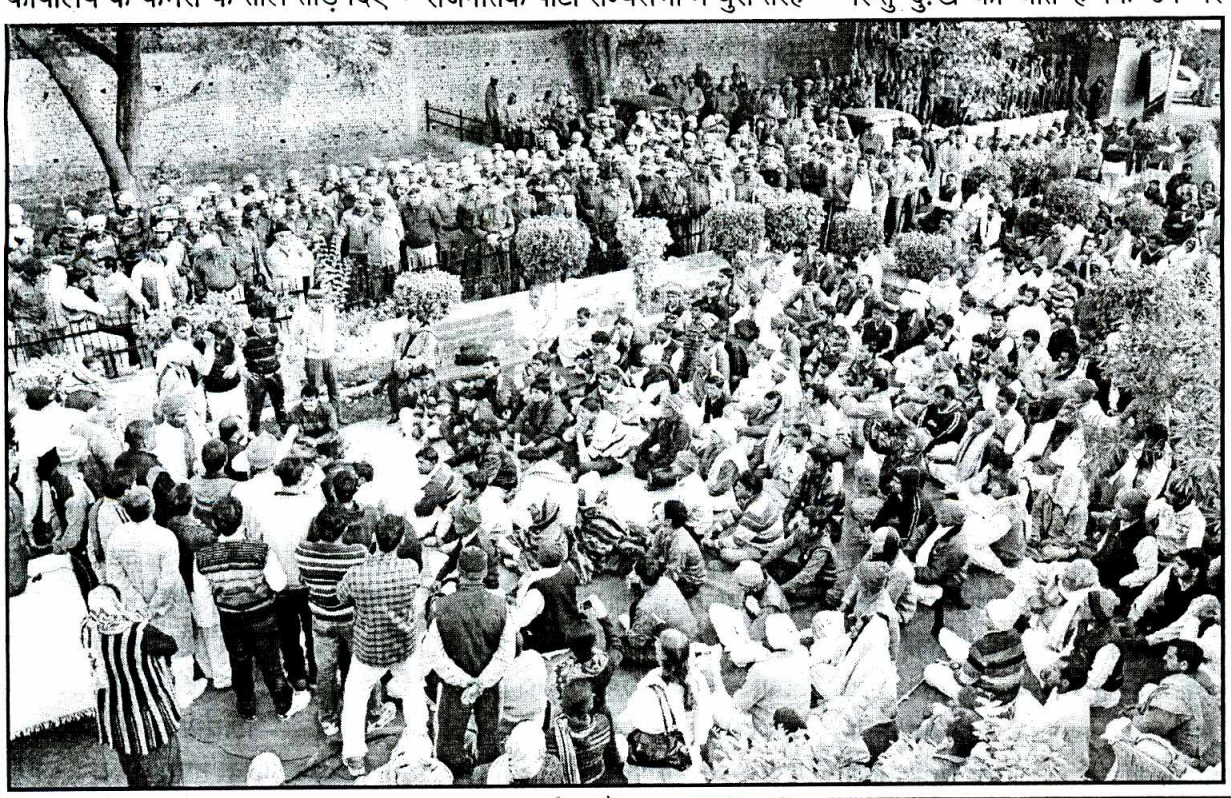

स्वामी दयानन्द का यजुर्वेदभाष्य और स्वतंत्रता आन्दोलन

स्वामी दयानन्द सरस्वती के हृदय में राष्ट्रभक्ति कूट-कूटकर भरी हुई थी। वे इस बात से अत्यन्त दुखित थे आज हमारा देश विदेशियों के शासन में बुरी तरह से कराह रहा है। वे इस बात को भी किसी भी रूप में स्वीकार करने को सहमत नहीं थे कि आर्य लोग इस देश में बाहर से आकर बसे हैं। वे सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में लिखते हैं-किसी संस्कृत ग्रन्थ वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों से लड़कर जय पाके, निकाल के, इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है। फिर वर्तमान राज्यव्यवस्था विदेशियों के हाथ में है यह उनके लिए दुःख का सबसे बड़ा कारण था। वे इस परदासता के कारण खोजकर लिखते हैं-'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा की क्या कहनी। किन्तु आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतंत्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार दुःख भोगना पड़ता है।' स्वामी दयानन्द सरस्वती किसी विदेशी राज्य के समर्थक नहीं थे। वे आगे लिखते हैं, कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है। फिर वे इन स्थिति के कारणों पर विचार कर लिखते हैं, भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक् पृथक् शिक्षा, अलग अलग व्यवहार वा विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे, परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखते हैं उसी का मान्य करना भद्रपुरुषों का काम है। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में विदेशी राज्य के कारण ही हमारे देश में निर्धनता का कारण है, इस पर भी विचार किया है। वे मानते हैं कि सरकार ने नमक पर ही इतना कर लगा दिया है कि गरीब आदमी की पकड़ से वह बाहर होगया है। इसी प्रकार उन्होंने वनविभाग द्वारा लगाये गये प्रतिबंधों पर भी रोष प्रकट किया है। उन्होंने विकेन्द्रीयकरण शासन व्यवस्था पर भी पर्याप्त लिखा है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के काल में देश तत्काल क्रान्ति करने के योग्य नहीं था। देश में शिक्षा 2% भी नहीं थी। निर्धनता ऐसी थी कि कभी तो मुर्दे को ढकने के लिए कफन भी नहीं मिल पाता था। अंग्रेजों ने देश को निरस्त्र कर दिया था। देश की लड़ाकू जातियों को सेना में भरती कर अंग्रेजों ने अपना दास बना लिया था। 1857 की क्रान्ति में सिक्खों और अधिकांश देशी राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया था। इसलिए उन्होंने पहिले जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना तथा विद्वानों को क्रान्ति करने का ढंग बताने का कार्य किया। इसके लिए उन्होंने यजुर्वेदभाष्य का उपयोग किया। उन्होंने बड़े धीरे-धीरे विद्वानों को बताया कि तुम्हें क्या करना है। इस विषय को अब हम उनके भाष्य के आधार पर ही आगे बढ़ाना चाहते हैं।

अग्रेणीरसि स्वावेशऽउन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्य-स्त्वौषधीभ्यः।
द्यामग्रेणास्पृक्षऽआन्तरिक्षं मध्वेनाप्राः, पृथिवीमुपरेणादृꣳहीः।

यजुर्वेद अ. 6 मंत्र 2

भावार्थ—प्रजाजनों के स्वीकार किये बिना राजा राज्य करने को योग्य नहीं होता तथा राजा आदि सभा जिसको आदर से न चाहें वह मंत्री होने को वा कोई पुरुष अपनी कीर्ति को उत्तरोत्तर दृढ़ता के बिना सेना का ईश्वर यथायोग्य न्याय से दण्ड करने अर्थात् न्यायाधीश होने और राजा के मंडल की ईश्वरता योग्य नहीं हो सकता।

टिप्पणी—इस मंत्र में मुख्य रूप से यह बताया गया है कि प्रजा यदि राजा को स्वीकार न करे तो वह राजा कैसे रह सकता है। अर्थात् राजा के विरुद्ध जनमत तैयार किया जावे। वास्तव में जनमत में बड़ी शक्ति है। जिस नेपोलियन तृतीय को फ्रांस में जनता ने भारी बहुमत से चुना था एक वर्ष बाद जनमत उसके इतना विरुद्ध हो गया कि उसे फ्रांस से भागकर इंग्लैण्ड में शरण लेनी पड़ी। दूसरी बात यह है कि बिना सेना को विश्वास में लिए भी कोई राज्य नहीं कर सकता है। पाकिस्तान में यह घटना कई बार दोहरायी गई है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का इसमें आशय यह था कि सावधानी से सेना में भी देश प्रेम की भावना उत्पन्न की जावे। उन्हें धीरे-धीरे अपने अंग्रेज अधिकारियों के विरुद्ध भड़काया जावे। सेना और जनता यदि ये दोनों साथ साथ विदेशी शासन के विरोध में खड़े हो जावें तो स्वतंत्रता प्राप्त करने में अधिक समय नहीं लगेगा। आगे चलकर वे यजुर्वेद अध्याय 6 मंत्र संख्या 22 के भावार्थ में लिखते हैं, राजा और राजाओं के कामदार लोग अनीति से प्रजाजनों का धन न लेवें किन्तु राज्यपालन के लिए राजपुरुष प्रतिज्ञा करें कि हम लोग अन्याय न करेंगे अर्थात् हम सर्वथा तुम्हारी रक्षा और डाकू, चोर, लम्पट, जवाड़, कपटी, कुमार्गी अन्यायी और कुकर्मियों को निरन्तर दण्ड देवेंगे।

इस विचार के द्वारा जनता में असन्तोष उत्पन्न किया जाना था क्योंकि इस काल की सरकार न्याय पर आधारित नहीं थी। अंग्रेज अधिकारियों को अपराधों में लिप्त होने पर न्यायालय दण्ड नहीं दे पाता था। सामान्य प्रजा अत्याचारों से त्रस्त थी।

देवीरापोऽअपांनपाद्यो व ऽऊर्म्मिर्ह-विष्यऽइन्द्रियावान् मदिन्तमः।
तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा। यजु. 6.27

भावार्थ-प्रजाजनों को यह उचित है कि आपस में सम्मति कर किसी उत्कृष्ट गुण युक्त सभापति को राजा मानकर राज्य पालन के लिए कर देकर न्याय को प्राप्त हों।

इसका अर्थ यह भी हुआ कि भारतीय प्रजा सम्मति करके किसी श्रेष्ठ पुरुष को राजा स्वीकार कर राज्य चलाने के लिए उसे सहर्ष कर दे। मैं समझता हूँ कि इससे अधिक खुली क्रान्ति और दूसरी नहीं हो सकती थी। इसी को ध्यान में रखकर अप्रवासी भारतीयों ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय राजा महेन्द्रप्रताप सिंह के नेतृत्व में एक प्रवासी सरकार की स्थापना की थी। यही राजा महेन्द्र प्रताप सिंह स्वाधीनता के बाद भारतीय लोकसभा के सदस्य भी चुने गए थे।

ते नोऽअर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः।
सहस्त्रसा मेधसाता सनिष्यवो महो ये धनꣳसमिथेषु जभ्रिरे॥ यजुर्वेद 9.17

पदार्थ-(ये) जो (अर्वन्तः) ज्ञानवान् (हवनश्रुतः) ग्रहण करने योग्य शास्त्रों को चुनने (वाजिनः) प्रशंसित बुद्धिमान् (मितद्रवः) शास्त्रयुक्त विषय को प्राप्त होने (सहस्त्रसाः) असंख्य विद्या के विषयों को सेवने और (सनिष्यवः) अपने आत्मा की सुन्दर भक्ति करनेहारे राजपुरुष (मेधसाता) सभाओं के दान से युक्त (समिधेषु) संग्रामों में (नः) हमारे बड़े (धनम्) ऐश्वर्य को (जभ्रिरे) धारण करें वे (विश्वे) सब विद्वान् लोग हमारे (हवम्) पढ़ने पढ़ाने से होनेवाले बोध शब्दों और वादी प्रतिवादियों के विवाद को (शृण्वन्तु) सुनें। मंत्र के भावार्थ में स्वामी जी ने असहयोगी आन्दोलन की विचारधारा ही प्रस्तुत कर दी है। वे लिखते हैं- जो ये राजपुरुष हमसे कर लेते हैं वे हमारी निरन्तर रक्षा करें नहीं तो कर न लें और हम भी उनको कर न देवें। उनको प्रजा की रक्षा और दुष्टों के साथ युद्ध करके के लिए ही कर देना चाहिए, अन्य किसी प्रयोजन के लिए नहीं, यह निश्चित है। वास्तव में यह भावार्थ एक क्रान्ति को उत्पन्न करने का सामर्थ्य रखता है। परन्तु स्वामी दयानन्द केवल इतना लिख देने मात्र से ही सन्तुष्ट नहीं है।

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पातां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां
श्रोत्रं यज्ञेन कल्पनां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।
प्रजापते प्रजाऽअभूम स्वर्देवाऽअग-न्मामृताऽअभूम॥ यजु. 9.21

पदार्थ—हे मनुष्यो! तुम्हारी (आयुः) अवस्था (यज्ञेन) ईश्वर की आज्ञा पालन से निरन्तर (कल्पताम्) समर्थ होवे। (प्राणः) जीवन का हेतु बलकारी प्राण (यज्ञेन) धर्मयुक्त विद्याभ्यास से (कल्पताम्) समर्थ होवे (चक्षुः) नेत्र (यज्ञेन) प्रत्यक्ष के विषय शिष्टाचार से (कल्पताम्) समर्थ होवे। (श्रोत्रम्) कान (यज्ञेन) वेदाभ्यास से (कल्पताम्) समर्थ हों और (पृष्ठम्) पूछना (यज्ञेन) संवाद से (कल्पताम्) समर्थ होवे। (यज्ञः) यज्ञ (यज्ञेन) ब्रह्मचर्यादि के आचरण से (कल्पताम्) समर्थ हो। जैसे हम लोग (प्रजापते) सबके पालनेवाले ईश्वर के समान धर्मात्मा राजा के (प्रजाः) पालने योग्य सन्तानों के समान (अभूम) होवें तथा (देवाः) विद्वान् हुए (अमृताः) जीवन मरण से छूटे (स्वः) मोक्ष सुख को (अगन्म) अच्छे प्रकार प्राप्त होवें।

भावार्थ- मैं ईश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता हूँ कि तुम लोग मेरे तुल्य धर्म युक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले पुरुष की ही प्रजा होओ अन्य किसी क्षुद्राशय पुरुष की प्रजा होना स्वीकार कभी मत करो। जैसे मुझ को न्यायाधीश मान मेरी आज्ञा में वर्त और अपना सब कुछ धर्म के साथ संयुक्त करके इस लोक परलोक के सुख को नित्य प्राप्त करते रहो, वैसे जो पुरुष धर्मयुक्त न्याय से तुम्हारा निरन्तर पालन करे उसी को सभापति राजा मानो।

मैं समझता हूँ कि इसके बाद कहने को कुछ भी शेष नहीं रहा है। इति।

—शिवनारायण उपाध्याय,
73 शास्त्री नगर, कोटा (राज.)

www.thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कोलेजियम चुनाव दिनांक 10 दिसम्बर 2013 में निर्विरोध चुने गए सदस्यों की सूची

क्र०सं०	कोलेजियम नं०	सदस्यता सं०	नाम
1	1	01	मा. रामनिरंजन
2	2	368	सतीश बंसल
3	3	365	डॉ. गेन्दाराम आर्य
4	4	26	धर्मवीर शास्त्री
5	5	32	चांदसिंह आर्य
6	6	20	उमेदसिंह शर्मा
7	7	06	देवदत्त आर्य
8	8	12	ओमप्रकाश आर्य
9	9	28	ऋषिपाल आर्य
10	10	22	टेकराम आर्य
11	11	09	सुरेन्द्रकुमार
12	12	355	जगदीश सींवर
13	13	360	बृजलाल
14	14	48	राजवीर शास्त्री
15	15	49	कन्हैयालाल आर्य
16	16	55	नरवीरलाल चौधरी
17	17	61	वी.पी. सिंह
18	18	52	अमीरचन्द श्रीधर
19	19	224	शिवकुमार आर्य
20	20	64	सतीशकुमार आर्य
21	21	66	दलशेरसिंह
22	22	70	दीपकुमार
23	23	103	आचार्य योगेन्द्र
24	24	101	ईश्वरसिंह आर्य
25	25	96	वीरेन्द्रसिंह
26	26	85	ओमकुमार आर्य
27	27	93	आचार्य बलदेव
28	28	109	विनोद आर्य
29	29	97	गुलाबसिंह आर्य
30	30	87	फतेसिंह आर्य
31	31	74	लाजपतराय आर्य
63	63	212	मुखतियार आर्य
64	64	221	दलीपसिंह आर्य
65	65	210	रोशनलाल आर्य
66	66	219	बिशम्भर
67	67	226	हरिश्चन्द्र शास्त्री
68	68	233	प्रहलाद सिंह
69	69	225	सरदारसिंह कुण्डू
70	70	240	आजादसिंह आर्य
71	71	251	रणदीपसिंह
72	72	238	सत्यवान आर्य
73	73	246	देवीसिंह आर्य
74	74	259	जगमेन्द्र
75	75	244	श्रीमती गीता मलिक
76	76	242	राजेन्द्र सिंह
77	77	261	सत्यवीर शास्त्री
78	78	263	वेदपाल आर्य
79	79	281	सत्यव्रत शास्त्री
80	80	272	राजेन्द्रकुमार शास्त्री
81	81	298	कैप्टन रणधीर
82	82	270	सुमित्रा आर्या
83	83	275	सुखवीरसिंह शास्त्री
32	32	71	मा. कपूरसिंह आर्य
33	33	75	रायसिंह आर्य
34	34	114	जयगोपाल आर्य
35	35	132	आचार्य विजयपाल
36	36	134	डॉ. सुरेन्द्रकुमार
37	37	156	पूर्णसिंह आर्य
38	38	149	नवीनकुमार
39	39	164	उदयसिंह
40	40	150	काशीराम
41	41	143	सत्यवान आर्य
42	42	139	राजबीर आर्य
43	43	120	श्री ओ३म् आर्य
44	44	155	मा० उमेदसिंह
45	45	141	उमेदसिंह
46	46	172	सुनीलकुमार
47	47	117	ओमप्रकाश
48	48	147	कर्णदेव
49	49	130	राजपाल
50	50	167	महेन्द्रसिंह
51	51	125	जोगेन्द्र शास्त्री
52	52	129	सत्यव्रत आर्य
53	53	180	देवेन्द्र सिंह
54	54	176	महावीर सिंह
55	55	175	वीरेन्द्र आर्य
56	56	184	महिपाल राणा
57	57	189	राजेश आर्य
58	58	198	डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार
59	59	196	हरीश आर्य
60	60	200	कुलवन्तसिंह सैनी
61	61	220	वेदप्रकाश आर्य
62	62	213	प्रकाश आर्य
84	86	279	यशपाल आचार्य
85	87	292	रोहताश आर्य
86	88	311	सुजानसिंह
87	89	309	धर्मवीर आर्य
88	90	303	रामकरण
89	91	336	मा. रामपाल आर्य
90	92	340	ओमप्रकाश
91	93	333	वेदप्रकाश आर्य
92	94	324	स्वामी ब्रह्मानन्द
93	95	323	ब्र० बालकृष्ण आर्य
94	96	346	सतीशकुमार
95	97	320	धर्मपाल मलिक
96	98	353	पृथ्वीसिंह शास्त्री
97	99	341	सूबे. करतारसिंह आर्य
98	100	335	पवनकुमार आर्य
99	101	348	भारतभूषण
100	102	33	डॉ. विमला महता
101	103	39	ऋषिपाल
102	104	46	होतीलाल आर्य
103	105	43	सत्यप्रकाश अरोड़ा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कोलेजियम चुनाव दिनांक 10 दिसम्बर 2013 में चुने गए सदस्यों की सूची

क्र०सं०	कोलेजियम नं०	सदस्यता सं०	नाम
1.	84	264	रामफलसिंह आर्य
2.	85	293	जिलेसिंह आर्य

10/12/2013

(धर्मपाल आर्य)
चुनाव अधिकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

गाय का दूध उत्तम है भैंस के दूध से

गाय का दूध

1. गाय का दूध पतला होता है, पतला होने के कारण वह शीघ्र पच जाता है।
2. माँ के दूध जैसा होने के कारण यह शिशु एवं बच्चों के लिए अच्छा है।
3. यह चुस्ती बढ़ाता है।
4. यह पेट की बीमारियों को जड़ से समाप्त करता है। आँतों के कीड़ों को समाप्त करता है।
5. स्मरणशक्ति बढ़ाता है। स्कूल जानेवाले बच्चों और दिमागी काम करने वालों की मेधाशक्ति को बढ़ाता है।
6. यह मस्तिष्क व बुद्धि को उन्नत करता है।
7. ताकत सिर्फ गाय के दूध से ही आती है। सेना में जवान व जनरल, उनके कुत्ते-खच्चर सभी जिनको बहुत ताकत चाहिये केवल गाय का दूध पीते हैं। देश के 41 मिलिट्री डेयरी फार्मों में एक भी भैंस नहीं है।
8. यह सतोगुण को बढ़ानेवाला है। ऋषि-मुनि, साधु आदि इसका सेवन करते हैं।
9. गाय का दूध यज्ञ-होम में प्रयोग होता है।
10. मन्दिरों में पूजा व अभिषेक में गाय के दूध का ही प्रयोग होता है।
11. गाय देवस्वरूप है। उसके शरीर में सभी देवी-देवता निवास करते हैं। गाय के दूध-घी से दैवीय शक्ति प्राप्त होती है।
12. गाय का दूध सर्वरोग निवारक है।
13. गाय के दूध में स्वर्ण होता है। सूर्यकेतु नाड़ी के द्वारा गाय सूर्य की किरणों से स्वर्णतत्त्व ग्रहण करके उसे दूध में प्रदान करती है। अत: गाय का दूध औषधि का कार्य करता है।
14. गाय के दूध के पीलेपन में कैराटिन पदार्थ होता है जो विटामिन 'ए' का पर्याय है और नेत्रज्योति बढ़ाता है तथा हृदय को पुष्ट करता है।
15. यज्ञ में घी आहुति देवताओं को दिया जानावाला हविभाग है, देवता केवल गाय के घी की आहुति से ही प्रसन्न होते हैं।
16. कल्याण के पर्याय शिव का वाहन नंदी (गोपुत्र) है। गव्यपदार्थों का प्रयोग करने से मनुष्य का कल्याण होता है।

भैंस का दूध

1. भैंस का दूध गाढ़ा होता है, गाढ़ा होने के कारण देर से पचता है।
2. देर से पचने के कारण यह बच्चों के लिये ठीक नहीं है।
3. यह सुस्ती बढ़ाता है।
4. तीव्र अम्लता उत्पन्न करता है, आँतों के कीड़ों में वृद्धि करता है।
5. स्मरणशक्ति कम करता है। विद्यार्थियों में भुलक्कड़पन की आदत बढ़ाता है।
6. यह मस्तिष्क व बुद्धि को मंद करता है।
7. भैंस के दूध से ताकत नहीं बढ़ती, केवल चर्बी बढ़ती है। चर्बी के कारण मोटापा बढ़ता है। मोटा व्यक्ति थुलथुल होता है, ताकतवर नहीं। यह मोटापा तमाम तरह की बीमारियों का जन्मदाता है।
8. यह तमोगुण को बढ़ानेवाला है। साधारण मनुष्य इसके अवगुणों से परिचित न होने के कारण इसे पीते हैं।

शेष पृष्ठ 6 पर....

महर्षि की मातृ-शक्ति के सुधार की प्रबल भावना

आषाढ़ सुदी ९ सं० १९३६ को श्री स्वामी जी ने मेरठ में पदार्पण किया और श्रीमान् रामशरण दास जी को कोठी में आसन लगाया। यहाँ उन्होंने एक-एक, दो-दो सप्ताह की अनेक व्याख्यान-मालायें दी, जिन से मेरठ निवासी काफी लाभान्वित हुए। वहीं स्वामी जी की यह हार्दिक कामना हुई कि किसी प्रकार भी मातृ-शक्ति का सुधार हो। स्त्रियों में भी धर्मप्रचार और शुभ शिक्षा फैले। वे अपनी कुशाग्र बुद्धि से इस सिद्धान्त के मर्म को जानते थे कि सन्तानों में नवजीवन की नींव रखनेवाले हाथ माताओं के होते हैं। मीठी-मीठी लोरियों के साथ और पोली-पोली थपक से मातायें पुत्रों में वे भाव भर देती हैं, जो किसी भी दूसरे स्थान में प्राप्त नहीं हो सकते। जननियाँ जाति के जीवन की वास्तविक जड़ हैं, सन्तति को उन्नति के उच्चतम शिखर पर लेजाने के लिए जगमगाती ज्योतियाँ हैं। परन्तु उन्हें कोई ऐसी आर्य-देवी नहीं दीखती थी, जो भारत की भोली-भाली बहिनों के शिक्षा-दीक्षा का भार अपने ऊपर ले सके, जो स्त्री जाति सुधार के लिए प्राणपण से समुद्यत होजाये।

स्वामी जी का हृदय इसी ऊहा-पोह और विचार-परम्परा में परायण था कि एकाएक उनकी सेवा में श्री रमा के पत्र आने लग गये। वे पत्र पूज्य-भाव से, आदर बुद्धि और भक्ति-विनय से परिपूर्ण थे। श्री रमा ने अपनी विनय-पत्रिकाओं में जहाँ श्री दर्शनों की तीव्र लालसा प्रकट की वहाँ श्री आदेश को भी परिपालन करने की आशा दिलाई।

स्वामी जी ने अपनी अपार कृपा से रमा को दर्शन देना स्वीकार कर लिया। श्री रमा जी बड़े भक्ति-भाव से मेरठ में आई और श्री दर्शनों से लाभ उठाने लगी। श्री रमा बाई महाराष्ट्र की पुत्री थी। उनका संस्कृत-पाण्डित्य प्रख्यात था। वे धाराप्रवाह संस्कृत भाषण करती थी। उनके विचार कुछ स्वतन्त्रता को लिए थे। वे एक बङ्गीय कायस्थ से विवाह करना चाहती थी। इसलिए बन्धु-बान्धवों ने उन्हें घर में पृथक् कर दिया था। वे कलकत्ता से मेरठ आई थी।

उस समय उनके साथ एक नौकर, एक नौकरानी और एक बङ्गाली सभ्य था। सम्भवत: वह वही भद्र पुरुष था, जिसके साथ वे विवाह करना चाहती थी।

श्री रमाबाई जी के मेरठ में अनेक भाषण हुए। उन दिनों में पं० भीमसेन जी, ज्वालादत्त जी, पालीराम जी और श्रीमान् ज्योतिस्वरूप जी आदि विद्यार्थियों ने महाराज से वैशेषिक दर्शन पढ़ना आरम्भ किया। श्री रमा जी भी पढ़ा करती। महर्षि दयानन्द की पढ़ाने की शैली अत्युत्तम थी। उनकी व्याख्यापद्धति अपूर्व थी। श्री रमादि सभी पाठक उनकी पाठन परिपाटी से अति प्रसन्न होते। किसी का कैसा भी संशय क्यों न हो पाठ पढ़ते ही पढ़ते दूर हो जाता।

स्वामी जी ने श्री रमा जी को उपदेश दिया "इस समय आर्य जाति की पुत्रियों की अवस्था अति शोचनीय है। ये संसार भर के भ्रमों और कुरीतियों का केन्द्र बन रही हैं। आप आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर उनका सुधार कीजिए। उनकी शिक्षा का बीड़ा उठाइए। उनको दीन दशा से उभारिये। इस शुभ कार्य की आर्यसमाज की पद्धति पर चलाने से आपको धन की पर्याप्त सहायता प्राप्त होती रहेगी। महाराज ने उनको यह भी कहा, 'आपके बिना, मैंने आज तक सामने बैठाकर, किसी स्त्री को उपदेश नहीं दिया। आपको सम्मुख बैठाकर उपदेश सुनने का अवसर केवल इसीलिए दिया गया है कि आप अद्वितीय विदुषी हैं। सम्भव है मेरे वचन सुनकर आप आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लें और स्त्री जाति के परोपकार रूप, परम पुण्य कार्य में, प्राणपण से परायण हो जायें।' महाराज! गृहस्थ लोग भी तो उपकार का कार्य कर सकते हैं। उन्हें भी तो पुण्य-कर्म की पूंजी उपार्जन करने का पुष्कल अवकाश मिल जाता है। इस पर स्वामी जी ने कहा, "बन्धु-बान्धवों के विविध बन्धनों में जकड़े हुए जन परहित का उतना कार्य नहीं कर सकते, जितना कि एक ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी कर सकती है। जो जन एक दो व्यक्तियों को अपने प्रेम का केन्द्र बना लेते हैं, उनमें परहित-साधन की मात्रा, सहज ही से स्वल्प होजाती है। उन्हें काम धन्धों से अवकाश ही नहीं मिलता। जब पुत्र, पुत्री उत्पन्न हो जाते हैं तो उनके पालन-पोषण का सोच-विचार पीछे लग जाता है। पति और पुत्र-पौत्र आदि का वियोग सारे सुख को निपट नीरस बना देता है। जब मनुष्य इस प्रकार गृहस्थी के गहरे गढ़े में पड़ जाता है तो परोपकार के भाव एक-एक करके, भूलने लग जाता है। इसलिए रमा! आप अपने जीवन को परार्थ अर्पण कर दीजिए। महिला-मण्डल का मंगल कार्य साधित कीजिये।"

जैसे ज्वरावेश में मनुष्य को भोजन की रुचि नहीं होती, ठीक वैसे ही, प्रारब्धकर्म के प्रभाव से श्री रमा के हृदय में, महाराज के उपदेशों को स्थान नहीं मिला। रमा सारा जीवन ब्रह्मचर्य व्रत में बितानी के लिए समुद्यत न हुई।

—खुशहालचन्द्र आर्य, गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स, १८० महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-७

मन्त्र गीत-

बोध-प्रतिबोध

शिव शोध बोध प्रति पल पागो।
जागो रे व्रत धारक जागो॥ टेक॥
जब जाग गये तो सोना क्या?
बैठे रहने से होना क्या?
कर्त्तव्य पथ पर बढ़ जाओ,
तो दुर्लभ चाँदी-सोना क्या?
मत तिमिर ताक श्रुति पथ त्यागो।
जागो रे व्रत धारक जागो॥ 1॥
बन्द नयन के स्वप्न अधूरे।
खुले नयन के होते पूरे।
यही स्वप्न संकल्प जगाये,
करें ध्येय के सिद्ध कंगूरे।
संकल्प बोध उठ अनुरोगो।
जागो रे व्रत धारक जागो॥ 2॥
शिव निशा जहाँ मुस्काती है।
जागरण ज्योति जग जाती है।
संकल्पहीन सो जाते हैं,
धावक को राह दिखाती है।
श्रुति दिशा छोड़कर मत भागो।
जागो रे व्रत धारक जागो॥ 3॥
बोध मोद का लगता फेरा।
मिटता पाखण्डों का घेरा।
शिक्षा और सुरक्षा सधती,
हटता आडम्बर का डेरा।
बोध-गोद प्रिय प्रभु से मांगो।
जागो रे व्रत धारक जागो॥ 4॥
कुल फूल मूल शिव सौगन्धी।
शंकर-कर्षण सुत सम्बन्धी।
रक्षा, संचेत अमरता से,
हों जन्म उन्हीं के यशगन्धी।
योगक्षेम के क्षितिज छलांगो।
जागो रे व्रत धारक जागो॥ 5॥

स्रोत-बोधश्च त्वा प्रतिबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राश्च रक्षताम्।
गोपायंश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम्॥ अथर्व० 8.1.13॥

—देवनारायण भारद्वाज 'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001

गाय का दूध उत्तम है भैंस के दूध से... पृष्ठ 5 का शेष....

9. भैंस का दूध यज्ञ-होम में मान्य नहीं है।
10. मन्दिरों में अभिषेक, पूजा के लिये भैंस का दूध वर्जित है।
11. भैंस राक्षस संस्कृति एवं यवन संस्कृति की वाहक है, इसके दूध-घी के प्रयोग से राक्षस वृत्ति प्राप्त होती है।
12. भैंस का दूध हृदय रोग, शुगर, उच्च रक्तचाप, पाचनतंत्र के रोगों का जन्मदाता है।
13. भैंस का दूध बिल्कुल सफेद होता है, सफेद दूध देखने में अच्छा लगता है, परन्तु इसका कोई औषधीय उपयोग नहीं है। यह आलस्य और अत्यधिक नींद की वृत्ति बढ़ाता है।
14. भैंस के दूध में कोलेस्ट्रोल पदार्थ होता है जो रक्तशिराओं में जम जाता है, जिसकी वजह से हृदयाघात होता है।
15. माँ दुर्गा द्वारा राक्षस संस्कृति के वाहक भैंसे रूपी महिषासुर का वध किया गया था। देवता भैंस के घी की आहुति से अप्रसन्न होते हैं।
16. मृत्यु के पर्याय 'यमराज' का वाहन भैंसा (भैंस पुत्र) है। भैंस के पदार्थों का प्रयोग करने से मनुष्य हृदयाघात आदि बीमारियों से ग्रसित होकर शनैः-शनैः मृत्यु को प्राप्त होता है।

अब आप निश्चय कर लें कि आप गाय का दूध पीकर निरोगी रहना चाहते हैं अथवा भैंस का दूध पीकर रोगी बने रहना चाहते हैं। आप गाय का दूध पीकर लम्बी आयु प्राप्त करना चाहते हैं या भैंस का दूध पीकर अल्पायु। आप गाय का दूध पीकर बुद्धिमान्, ताकतवर बनना चाहते हैं या भैंस का दूध पीकर मंदबुद्धि तथा थुलथुल बनना चाहते हैं। आप गाय का दूध पीकर देव संस्कृति के वाहक बनना चाहते हैं या भैंस का दूध पीकर राक्षस संस्कृति के वाहक बनना चाहते हैं। यदि आप फिर भी भैंस का दूध ही प्रयोग करना चाहते हैं तो हमारा विनम्र निवेदन है कि आप बैंक में तीन लाख रुपये की एक फिक्सड डिपोजिट करवा दें ताकि भविष्य में हृदय रोग से ग्रसित होने पर कार्डियक सर्जरी कराने के लिए आपको पैसे की दिक्कत न हो।

— प्रांतीय महामंत्री, भारतीय गोवंश रक्षण-संवर्द्धन परिषद्, जवाहर बुक डिपो निकट आर्यसमाज, स्वामी पाड़ा, मेरठ

आर्य-संसार

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 130वां बलिदान समारोह

आर्यसमाज नई मण्डी मुजफ्फर नगर में दिनांक 3.11.2013 दिन रविवार को दीपावली व महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य राकेश कुमार आर्य जी ने राष्ट्र को सुख समृद्धि हेतु वेदमन्त्रों से देवयज्ञ करवाया। यज्ञ के यजमान शरद आर्य सपत्नीक रहे। राकेश कुमार जी ने बताया कि सन् 1883 के 30 अक्तूबर दिन मंगलवार दीपावली को सायं छः बजे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने निर्वाण प्राप्त किया था।

आर्यसमाज के प्रधान आनन्द पाल सिंह आर्य ने अपने उद्बोधन में बताया कि महर्षि दयानन्द ने लगभग 60 वर्ष की आयु के अन्तिम 20 वर्ष देश-दुनिया की सेवार्थ समर्पण भाव से लगाये जिसमें उन्होंने एकेश्वरवाद के वेदमत को प्रचारित किया तथा कई अपूर्व अनुपम ग्रन्थ मानव-मात्र के कल्याणार्थ रचे जिनमें ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, सत्यार्थप्रकाश, गोकरुणानिधि व पंचमहायज्ञ विधि आदि मुख्य हैं। महर्षि ने मानव मात्र को पाखण्ड भरे अन्धविश्वासों से मुक्ति पाने की सच्ची राह दिखाई। कार्यक्रम को सफल बनाने में बाबू राजपाल सिंह चाहल एडवोकेट, सुरेन्द्र पाल सिंह, डॉ० नरेश कुमार, गुलबीर सिंह आर्य, मंगल सिंह आर्य, आनन्द स्वरूप आर्य, देवीसिंह आर्य, वीरेन्द्र सिंह आर्य, मा० सोमपाल सिंह आर्य, इं० रणवीर सिंह आर्य का विशेष सहयोग रहा। समारोह के अध्यक्ष पद से आर्यरत्न आचार्य गुरुदत्त आर्य ने बताया कि ऋषि बलिदान पर्व तथा दीपावली का पर्व सादगी से मनायें। पर्यावरण को प्रदूषित करने का कार्य न करें। वेदों व ऋषिकृत ग्रन्थों का स्वाध्याय करें, अपने आचरण को यज्ञमय बनायें, घरों में यज्ञ व विद्वान् संन्यासी महात्माओं का सत्कार करें, भावी पीढ़ी को संस्कार प्रदान करें। आर.पी. शर्मा ने बताया कि अंग्रेजों द्वारा 1857 की क्रान्ति को जिस नृशंसता से कुचला था उससे देश में श्मशान जैसी शान्ति छा गई थी। ऐसे समय में निर्भीक संन्यासी देव दयानन्द ने देश में स्वतन्त्रता की अलख जगाकर लोगों की रगों में नवरक्त का संचार किया था। इस अवसर पर नगर व नगर की सभी समाजों से सदस्य उपस्थित हुए। वैदिक साहित्य क्रय हेतु हानि-लाभ रहित उपलब्ध कराया गया। मिष्ठान्न वितरण तथा जलपान के साथ समारोह का समापन हुआ।

—आर.पी. शर्मा, मंत्री, आर्यसमाज
नई मण्डी मुजफ्फरनगर-251001

आर्यसमाज फतेहाबाद ने स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया

आर्यसमाज फतेहाबाद की ओर से दिनांक 22.12.13 को आर्यसमाज नागोरी गेट के संरक्षक चौ० हरिसिंह सैनी की अध्यक्षता में स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रात: 9 बजे हवन किया गया। कई यजमान दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया।

10 बजे सभा शुरू हुई श्री राजेन्द्र जी बंसल प्रधान अग्रोहा निर्माण समिति (अग्रोहा धाम) मुख्य अतिथि थे। पं० भरतलाल शास्त्री (हांसी) ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन व कार्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। बहिन संगीता आर्या (सहारनपुर) के शिक्षाप्रद भजन हुये। चौ० हरिसिंह सैनी ने महिलाओं से अनुरोध किया कि पाखण्डों को छोड़कर आर्यसमाज के सम्पर्क में आओ साथ में महर्षि दयानन्द के नारी जाति पर उपकार गिनाए। वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द कुलपति धीरणवास का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ।

मंच पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, जगदीश सींवर सिरसा, श्री हरिसिंह भूषण आचार्य गुरुकुल मताना डिग्गी, बदलूराम आर्य, बजरंगलाल आर्य, बलराज मलिक, सत्यपाल बंसल, वेदप्रकाश गर्ग, महेन्द्र कुमार मुटरेजा, पूर्णचन्द नारंग आदि मंच पर उपस्थित थे। स्नेही व मुख्य अतिथि समेत 10 आर्यों को आर्यसमाज फतेहाबाद की ओर से स्मृतिचिह्न, वैदिक साहित्य देकर प्रधान बंसीलाल आर्य व सत्यपाल बंसल संरक्षक ने सम्मानित किया। चौ० हरिसिंह सैनी ने आर्यसमाज नागोरी गेट की ओर से 21000 रुपये, मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र बंसल ने भी 21000 रुपये का सहयोग देने की घोषणा की। लोगों ने फुटकर दान भी दिल खोलकर दिया।

—देशराज भाटिया, कोषाध्यक्ष
आर्यसमाज फतेहाबाद

स्वामी श्रद्धानन्द का 87वां बलिदान दिवस सम्पन्न

अलवर शहर की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों के सहयोग से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का 87वां बलिदान दिवस समारोह अति श्रद्धापूर्वक दिनांक 25.12.13 को आर्यसमाज अरावली विहार (काला कुआँ), अलवर में मनाया गया। देर सायं तक चले कार्यक्रम में राजगढ़, खैरथल, ईशरोदा, रामगढ़, तिजारा तथा गोविन्दगढ़ आर्यसमाजों के प्रतिनिधि एवं अलवर शहर के सैकड़ों धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि जगदीश प्रसाद गुप्त एडवोकेट प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर थे एवं समारोह की अध्यक्षता पं० अमरमुनि महामंत्री आर्य प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने की। विशिष्ट अतिथि प्रदीप कुमार आर्य पूर्व चेयरमैन यू.आई.टी. अलवर थे।

समारोह का प्रारम्भ पंचकुण्डीय यज्ञ से हुआ, जिसके ब्रह्मा पं० विनोदीलाल दीक्षित, पं० शिवकुमार कौशिक एवं रघुवीर आर्य थे। यज्ञ के पश्चात् आर्य बालिका उ.मा.वि. अलवर की छात्रों के अलावा किशोरीलाल-प्रधान खैरथल, श्योताजसिंह-प्रधान ईशरोदा, इन्दू अरोड़ा, ईश्वरीदेवी शर्मा तथा पुष्पा रानी ने ईश्वर भक्ति, महर्षि दयानन्द गुणगान एवं स्वामी श्रद्धानन्द पर मनोरम भजन प्रस्तुत किये। कस्बा राजगढ़ से आये छोटे-छोटे बच्चों ने व्यायाम व संगीत प्रस्तुत किया। आर्यसमाज अरावली विहार की ओर से मुख्य अतिथि, सभाध्यक्ष, विशिष्ट अतिथि, समाजसेवी संतोष अरोड़ा, पुरुषार्थी समाज के अध्यक्ष श्यामलाल खत्री, कमला शर्मा-निदेशक विद्यालय समिति, विभिन्न समाजों के प्रधान एवं मन्त्रियों का अभिनन्दन किया गया।

समारोह में जगदीश प्रसाद गुप्ता मुख्य अतिथि, प्रदीप कुमार आर्य विशिष्ट अतिथि, पं० अमरमुनि सभाध्यक्ष, जगदीश प्रसाद आर्य जिला प्रधान, धर्मसिंह आर्य जिला कोषाध्यक्ष, पं० विनोदीलाल दीक्षित, अशोक कुमार आर्य, सुरेश दर्गन आदि ने स्वामी श्रद्धानन्द को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे देशभक्त थे, जिन्होंने वैदिक संस्कृति की रक्षा करते हुए सीने पर गोली खाई। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा को भेंट कर संन्यास ले लिया, गाँधी जी को 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की, दिल्ली की जामा मस्जिद पर वेदमन्त्रों से भाषण दिया, अछूतोद्धार के कार्यक्रम चलाये, प्रलोभन से ईसाई तथा मुसलमान बना लिये गये हजारों हिन्दुओं को शुद्धियज्ञ द्वारा पुनः हिन्दू बनाया, बालिका शिक्षा के लिये विद्यालय खुलवाये, जलियावाला बाग कांड के बाद अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की तथा दिल्ली की चांदनी चौक में रोलेट एक्ट का विरोध करते समय अंग्रेज पुलिस को ललकारा व शांत किया, **'जनता पर गोली चलाने से पूर्व मेरे सीने में गोली मारो।'**

बहुत बड़ी संख्या में पधारे धर्मप्रेमियों में शिवाजी नेहरा, डॉ० राजेन्द्र कुमार आर्य, सुनील कुमार आर्य, रमेश चुघ, डॉ० बी.डी. चौधरी, ओमप्रकाश तनेजा, रविन्द्र सचदेवा, हरीशचन्द्र गुप्ता, रोशनलाल चक्रवर्ती, देवेन्द्र बत्रा, कैप्टन रघुनाथ सिंह, ब्रह्मदत्त आर्य, सुरेन्द्र सक्सेना, अशोक कुमार शर्मा, शशि भार्गव, सन्तोष अरोड़ा, विनोद भण्डारी, सुरेशचंद्र गोयल, डॉ० रविकान्त राणा, प्रेमलता आर्या तथा सरला आर्या प्रमुख थे।

समारोह का संचालन धर्मवीर आर्य, मन्त्री ने किया। सभी को धन्यवाद प्रधान कृष्णलाल अदलखा ने किया। समारोह के बाद विशाल ऋषिलंगर का आयोजन किया गया।

—धर्मवीर आर्य, प्रवक्ता व मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का... प्रथम पृष्ठ का शेष....

सभा वेदमन्त्रों—ईश्वरस्तुति, प्रार्थना, उपासना, के साथ प्रारम्भ हुई, शांतिपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई। आगन्तुकों के लिए भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। हमारी कामना है कि परमपिता परमात्मा हमें शुभ प्रेरणा दे, हमें उत्तम बुद्धि दे, सुपथ पर चलाये जिससे कि हम वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार में, ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने में और अच्छे संस्कार देकर सुयोग्य युवाओं को आगे लाकर राष्ट्र-निर्माण के कार्य में तन, मन से जुट जायें। सभा को नवनिर्वाचित प्रधान पूज्य आचार्य विजयपाल का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ।

सम्पर्क—1607/7, जवाहर नगर, पटियाला चौक, जीन्द-126102 (हरयाणा) मो० 09416294347, फोन 01681-226147

संगच्छध्वम्

❑ मा० रामपाल दहिया, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

परमात्मा की असीम अनुपम कृपा से हमें मानव देह में सुकर्म करने का सुनहरा अवसर प्रा हुआ है। मानवी सृष्टि के आदि परमात्मा ने हमें चार ऋषियों के माध्यम से उपदेश प्रदान करते हुए कहा, ''अहं आर्याय।'' इस ईश्वर वाणी को अन्तःकरण में ध ण कर दानवी भावनाओं का परित्याग कर जब तक मानव देव बनने के लिए प्रयासरत रहा तब तक करोड़ों वर्षों तक आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य सम्पूर्ण विश्व में स्थिर रहा। क्योंकि वेदपथ ही वह सुपथ है जिस पर चलकर आत्मा को किसी भी प्रकार का भय, शंका एवं लज्जा नहीं रहती। इस त्रिवेणी से उद्धार पाकर मानव आत्मा परमात्मा के सान्निध्य में आकर उत्साह, आनन्द एवं निर्भयता से परिपूर्ण हो जाता है।

वेदमार्ग पर ही चलते हुए मानव ने उसके अन्तर्निहित विज्ञान को जानकर नानाविध भौतिक आविष्कार किये, जिसका विवरण रामायण, महाभारत एवं अन्य आर्षग्रन्थों में उपलब्ध होता है। महाभारत काल से भी एक सहस्र वर्ष पूर्व हुई भौतिक उन्नति के साथ ही वैदिक संस्कारों का ह्रास होना प्रारम्भ हुआ और संस्कार-विहीन भौतिक उन्नति सर्वदा पतन का ही कारण बनी। सत्तालोलुपता के वशीभूत हुए कौरव एवं पाण्डवों के मध्य महाविनाशकारी महाभारत का युद्ध हुआ और वहीं से आर्यावर्त के पतन का नद खुल गया जो आज तक अनवरत प्रवाहमान है।

वैदिक धर्म की हानि को रोकने के लिए एवं अधर्म के विनाश के लिए समय-समय पर विभिन्न कालखण्ड में अपने बुद्धिकौशल एवं ज्ञान के अनुसार महान् आत्माओं ने प्रयास किया लेकिन ये प्रयास मूल (वेद) रहित होने के कारण उतने सफल न हो सके।

एक ऐसा कालखण्ड जब चहुँओर पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीति, कुनीति, अशिक्षा एवं परतन्त्रता का साम्राज्य स्थापित और गहन होता जा रहा था। बाल-विवाह, सतीप्रथा, जैसी कुप्रथाएं सिर उठाकर भोले लोगों के मन-मस्तिष्क को अपने आगोश में ले रही थी। नारी व शूद्र को वैदिकी शिक्षा तो दूर सामान्य अक्षर ज्ञान का भी अधिकार छीन लिया गया था। अस्पृश्यता के घोर भँवर में फँसे दलित व्यक्ति नित्य विधर्मी होते जा रहे थे। ऐसे घनघोर घटाटोप के समय में दिव्य-दयानन्द का आगमन निश्चय ही प्रचण्ड सूर्यसम था। महर्षि जी के जीवन में क्रमशः घटित घटनाओं पर गहन चिन्तन करते हुए हम पाते हैं कि जैसे परमात्मा ने स्वयं उन्हें वो मार्ग दिखलाये हों जिन पर चलकर उन्हें एक नये युग का सूत्रपात करना था।

महर्षि दयानन्द जी ने गुरु-चरण-शरण में बैठकर जिस आर्ष-शिक्षा को पढ़ा, वहीं से उन्हें उनके जीवन का लक्ष्य प्राप्त हुआ। भयंकर विपत्तियों का सामना करके भी ऋषिवर ने अपने ईश्वरीय वेदपथ का परित्याग किसी भी कीमत पर नहीं किया। पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराने के बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। जीवन के प्रत्येक पल का पूर्ण सदुपयोग वेद एवं ऋषिकृत आर्षग्रन्थों का प्रचार-प्रसार एवं उनकी सत्य, सरल व्याख्या करना सम्मिलित था। इतने अल्प समय में इतना प्रचार-प्रसार करना ऋषि आत्मा का ही हो सकता है। महर्षि जी ने आर्यसमाज की स्थापना करके सबका उपकार करने का सन्देश प्रदान किया। इस समाज की विशेषता दर्शाते हुए उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' में उल्लेख किया है कि, ''जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।''

महर्षि जी ने अपने जीवनकाल में जो कार्य किया वह अनुपम एवं अनुकरणीय है। उनके एक-एक कार्य को करने में एक-एक आर्य बलिदानी ने अपना सम्पूर्ण जीवन लगाकर भी उस ऋषिस्तर का छू न पाये लेकिन सूर्य के चले जाने के बाद दीपक भी अपनी रोशनी से कुछ तो प्रकाश कर ही पाता है। ऋषि का साक्षात् सान्निध्य पाकर उनके दर्शन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ जिन्होंने भी प्राप्त किया उन्होंने वेदपथ पर चलकर यहाँ तक कि अपने जीवन को आहूत करके भी प्राणपन से आर्यविचारों का प्रसार किया।

वर्तमान सामाजिक परिवर्तन को देखकर ऐसा लगता है कि हमें और तीव्रता व बुद्धिमत्ता से लोगों को आर्य बनाने का ईश्वरीय कार्य करना होगा। आधुनिक तकनीक का लाभ उठाकर पाखण्डी व ढोंगी लोग अज्ञान एवं अन्धविश्वास को पहले से कहीं ज्यादा बढ़ाने में सफल हो रहे हैं। सही मार्ग के पता न होने पर आमजन उसी ओर चल पड़ते हैं जो उन्हें सम्मुख दिखलाई देता है। पाखण्डी लोग अपने पीतल को सोना बताकर बेच रहे हैं। आर्यसमाज के पास वेदरूपी खरा सोना होते हुए भी उसकी पहुँच आमजन तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं। आर्यसमाज को लोग एक जाति विशेष के रूप ही मानकर चलते हैं, जिस प्रकार तथाकथित जातियों के लोग अपनी जाति के आगे समाज शब्द का प्रयोग करते हैं तो यह भी वैसा ही कोई जाति समाज होगा।

आर्यसमाज का मुख्य कार्य पाखण्ड का खण्डन करना है, हम जब भी इस कार्य के साथ समझौता करेंगे उसी क्षण यह मानकर चलिए कि हम दयानन्द के विचारों की हत्या कर रहे हैं। जिस प्रकार से विषयुक्त उत्तमोत्तम भोजन भी त्याज्य होता है उसकी प्रकार से अनार्ष विचार भी त्याज्य ही हैं। समझौते एक तरह से सन्धि कार्य ही होता है जिसमें कुछ आपकी बातें मान्य होंगी कुछ हमारी। आर्यसमाज का कार्य करते हुए कुछ आर्यजन संस्था का नाम लिए बिना काम करने की बात किया करते हैं। क्या यह शोभनीय है? क्या आर्यों के विचार अछूत हैं जो इसका नाम लिए बिना किए जायें? हमें अपनी ज्येष्ठता व श्रेष्ठता को ध्यान में रखकर व सभी कार्य जो मानव के हितकारी हैं और वेदानुकूल हैं, करने ही होंगे। कार्य करने कीशैली को व्यावहारिकी एवं लाभदायिनी बनाना होगा। वेदप्रचार मण्डल का केवल गठन न करके उसे वास्तविकता के धरातल पर कार्यक्षम करना होगा।

जब कार्य क्षेत्र में पदार्पण करेंगे तो बाधायें आना स्वाभाविक है। परन्तु स्मरण रहे हम ईश्वरीय कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं, जब आप परमसत्ता के कार्य को करेंगे तो क्या हमें साहाय्य प्राप्त नहीं होगा। जब पण्डित पोलोराम ने स्वामी दयानन्द जी से कहा कि भगवन्! आर्यसमाज में केवल थोड़े से मनुष्य ही सम्मिलित हुए हैं। इतनी तुच्छ संख्या कोई महान् कार्य तो क्या कर सकेगी? तब स्वामी जी ने कहा, आप मेरी ओर तो देखिये। ''जब मैंने कार्य आरम्भ किया तो एकाकी और निस्सहाय था। आज परमात्मा की कृपा है कि आज जैसे सहस्रों सज्जन सच्चे हृदय से मेरे साथी हैं। पोलोराम! शुभ सबका चाहो और परिणाम परमात्मा पर छोड़ दो, निश्चय सफल हो जाओगे।''

आओ हम सब तिनके-तिनके हुई अपनी शक्ति को एकत्र कर पुरजोर प्रयास के साथ आगे बढ़ें तो निश्चय ही हम सबका कल्याण होगा।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया

दयानन्द ब्राह्म म्हाविद्यालय में 23.12.13 को सायंकाल सन्ध्या हवन के बाद विद्यालय के आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी की अध्यक्षता में हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, विद्यालय के अध्यापक श्री कैलाश चन्द्र शास्त्री, ब्रह्मचारी जोशी कुमार, पहलवान रणजीत सिंह आर्य ने स्वामी जी के जीवन व कार्य विस्तार से प्रकाश डाला। उनके बताए मार्ग पर चलने तथा उनकी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' का स्वाध्याय करने का सुझाव दिया। डॉ० प्रमोद का सारगर्भित आध्यात्मिक प्रवचन हुआ।

—ललित कुमार आर्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।